पर्यावरण भूगोल की प्रवृति

पर्यावरण भूगोल का परिचय

पृथ्वी पर जाने वाले विभिन्न तथ्यों के स्थानिक वितरण का वैज्ञानिक विश्लेषण भूगोल है। प्राकृतिक तत्वों का अध्ययन इसका विषय क्षेत्र है। जिसे प्राकृतिक पर्यावरण के प्रभावों का अध्ययन किया है रैटजेल ने अपनी पुस्तक एन्थ्रोपोज्योग्राफी में लिखा है। कि मानव भूगोल की दृश्य पर्यावरण से सर्वत्र सम्बन्धित होते है। मानव भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों मानव वर्गों के भौतिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण की शक्तियों प्रभावों और प्रतिक्रियाओं के पारस्परिक सम्बन्धो तथा समायोजनों के क्षेत्रीय प्रतिरूप का अध्ययन किया जाता है। जन्म के बीच कु० सैम्पल के द्वारा दी गयी मानव भूगोल की परिभाषा मे निहित थे जिसमें उन्होंने कहा था अस्थायी पृथ्वी और चंचल मानव के पारस्परिक परिवर्तनशील सम्बधों का अध्ययन मानव भूगोल है। इसी का परिणाम है। कि क्रियाशील मानव पाषाण युग ताम्रयुग लौह युग आदि से होकर उच्च से उच्चतम तकनीकी अनुसंधान और अन्वेषण करता हुआ आज कलयुग (यान्त्रिक युग) मे आ गया है। अगली सदी मे पूर्वार्द्ध मे विश्व की आधी से अधिक अबादी नगरीय हो जायगी

पृथ्वी पर मानव निवास लगभग 10 लाख वर्षों से है। परन्तु जितनी जनसंख्या की वृद्धि 10 लाख वर्षों मे नही हुई। उससे अधिक विगत 100 वर्षों मे हुई है।—

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

स्वास्थय सुविधाओं की वृद्धि से प्रति व्यक्ति औसत उम्र मे वृद्धि मृत्युदर मे ह्रास तथा स्थिर जन्मदर के कारण जनसंख्या मे तीव्र वृद्धि हुई है। रोजगार प्राप्ति चिकित्सा शिक्षा सुरक्षा आदि के आकर्षण मे नगरीय जनसंख्या मे अत्यधिक वृद्धि हुई संसाधनो के अत्याधिक विदोहन अति तिव्र औद्योगिक विकास तथा नगरो मे अनियंत्रित एवं अनियोजित आवास के कारण मानवजनित नये प्रकार के दुषित पर्यावरण जन्म हुआ है। जो जीवन का स्खलण करते है और यह प्रथम मृदा वायु जल वनस्पतियों आदि से होकर मानवीय स्वास्थय और उसकी कार्यक्षमता पर है

पर्यावरण भूगोल की अर्थ एवं परिभाषा

सुप्रसिद्ध भूगोलवेता डा० सविन्द्र सिंह ने पर्यावरण भूगोल को निम्नानुसार परिभाषित किया है।

(1) पर्यावरण भूगोल सामान्य रुप से जीवित जीवो तथा प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य तथा मुख्य रुप से प्रोद्योगिक स्तर पर विकसित आर्थिक मानव एवं उसके प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य अर्न्तसम्बन्धों के स्थानिक गुणो का अध्ययन करे

डा० सविन्द्र सिंह ने पर्यावरण भूगोल की अच्छी तरह समझने हेतु विस्तृत परिभाषा दी है।

(2) पर्यावरण भूगोल, भूगोल की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत प्राकृतिक पर्यावरण यन्त्र है। विभिन्न संघटको की विशेषताओं संघटन एवं कार्यो विभिन्न संघटकों की परस्पारिक

निभरता संघटको को आवह करने वाले विभिन्न प्राक्रमो एवं प्रक्रियाओं विभिन्न संघटको को एक दुसरे के साथ तथा आपस मे अन्त प्रक्रियाओं के स्थानिक तथा कालिक सन्दर्भ मे परिणामो प्रौद्योगिकीय स्तर पर विकसित आर्थिक मानव एवं तन्त्र के विभिन्न संघटको के मध्य अन्त प्रक्रियाओं तथा उनसे भूपारिस्थैतिक तन्त्र मे उनका परिवर्तनो तथा उनसे जनित पर्यावरण एव प्रदुषण और प्रदुषण नियंत्रण करता है।

③ डा० चौरसिया के अनुसार - पर्यावरण भूगोल मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण मे परिवर्तन एवं अनूकूलन के लिए किये गये प्रयासो तथा उसकी जैविक आर्थिक एव सामाजिक अवश्यकताओं की पुर्ति हेतु पर्यावरण से स्थापित सम्बधो का अध्ययन करता है

पर्यावरण भूगोल की प्रकृति

आज मानव के क्रियाकलापो से जनित पर्यावरण का अध्ययन महत्वपुर्ण होने के कारण अन्तविषयी हो गया है। यही कारण है कि प्राकृतिक एवं सामाजिक दोनो ही विधाओं मे पर्यावरण का अध्ययन समाजशास्त्री भूगोलवेत्ता रसायनशास्त्री वनस्पति शास्त्री योजनाविद अन्य वैज्ञानिक आदि सभी कर रहे है। पर्यावरण भूगोल के प्रथम सोपान मे अध्ययन की प्रकृति पुर्ण वैज्ञानिक है। जिसमे तथ्यो का प्राथमिक सर्वेक्षण एव विश्लेषण प्राकृतिक वैज्ञानिक की भाँति निष्पक्ष तथ्यात्मक एवं गणितीय

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

होता है।
इसमे एक क्षेत्र का विशेष का मानक वर्ग स्वतः अध्ययन की इकाईया होता है। कि मानव समाज आज विविध जटिलताओ का विशाल पुन्ज है। पर्यावरणीय प्रबन्ध नियोजन तथा समस्याओ का निदान हेतु सामाजिक वैज्ञानिक पर्यावरण की प्रवृतिऔर मानव समाज को ध्यान मे रखकर क्षेत्रीय सन्दर्भ मे समाधान प्रस्तुत करता है। चूंकि पर्यावरण भूगोल के विभिन्न तत्वो प्रवृति से सीधे सम्बन्धित है अतः उनके आकड़ो के प्रभाव का आकलन मूल्यांकन प्राकृतिक वैज्ञानिको की तरह किया जाताहै वैज्ञानिक निष्कर्षों का क्षेत्र पर प्रभाव तथा समाज के लिए सामाजिक विज्ञानो कीतरह होता है।

1. पर्यावरण का अध्ययन बहुआयामी होने से अन्तरानुशासनिक है।
2. पर्यावरण द्वारा प्रकृति अथवा संसार की प्रत्येक वस्तु गतिक अवस्था मे है और मनुष्य की प्रवृति प्रगति करने अथवा विकास की ओर जाने की है।
3. विभिन्न प्राकृतिक कारको तथा मानवीय हस्तक्षेप से उत्पन्न परिवर्तनशील पर्यावरण और उसके प्रभाव की व्याख्या के कारण इसकी प्रवृति है।
4. भूगोल क्षेत्रीय विज्ञान होने के कारण तथ्यो का विश्लेषण क्षेत्र के सन्दर्भ मे करता है।

प्राचार्य 19/09/2020
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया